मिहिर

सौरभ गांगुली ने अपने खेल जीवन के अन्त की घोषणा कर दी है। ऑस्ट्रेलिया के साथ चल रही इस सीरीज़ के बाद वो अपना बल्ला खूँटे पर टाँग देंगे। इस मौके पर हम याद करते हैं कुछ खास क्षण उस खिलाड़ी की खेल ज़िन्दगी के जिसने भारतीय टीम को एक नई शक्ल दी, लड़ने का जोश दिया।

अब कहाँ दिखेंगे ऑफ साइड के वे शॉट!

सौरभ गांगुली ने अपना पहला एकदिवसीय 1992 में ऑस्ट्रेलिया में खेला और पहला टेस्ट 1996 में इंग्लैंड के लॉर्ड्स में। पहले ही टेस्ट में उन्होंने शतक (131) जमाया। यह राहुल द्रविड़ का भी पहला टेस्ट था जिन्होंने 95 रन बनाए थे। यह इंग्लैंड दौरा नवजोत सिंह सिद्धू के बीच में से ही वापिस भारत लौट आने की घटना की वजह से भी याद किया जाता है। सिद्धू की वापसी और संजय मांजरेकर की चोट की वजह से ही गांगुली और द्रविड़ को टेस्ट खेलने का मौका मिला। इसका उन्होंने पूरा फायदा उठाया। कमाल तो यह था कि सौरभ ने अपने दूसरे टेस्ट में एक और शतक (136) जड़ दिया। उनकी पारियों को नज़दीक से देखने वाले साथी खिलाड़ी राहुल द्रविड़ ने दौरे के बाद कहा कि ऑफ साइड में गॉड के बाद गांगुली ही हैं। यह उनके ऑफ साइड के दर्शनीय स्ट्रोक-प्ले की तारीफ थी।

1997 में पकिस्तान के विरुद्ध कनाडा में सहारा कप के दौरान सौरभ लगातार 4 मैचों में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए। इसमें उनकी धीमी सीम गेंदबाज़ी का भी बहुत योगदान रहा जो कनाडा के ठण्डे मौसम में बहुत कारगर साबित हुई। एक मैच में तो उन्होंने सिर्फ 16 रन देकर 5 विकेट हासिल किए थे।

1997 में ही सौरभ ने एकदिवसीय क्रिकेट में पारी की शुरुआत करते हुए अपना पहला शतक जमाया। यहीं से सचिन और उनके बीच साझेदारी की शुरुआत हुई। उनकी जोड़ी आज तक एकदिवसीय मैचों की सर्वश्रेष्ठ सलामी जोड़ी मानी जाती है।

1999 का विश्व कप सौरभ का पहला विश्व कप था। श्रीलंका के विरुद्ध सिर्फ 158 गेंदों में 183 रन की उनकी पारी ने उन्हें हिन्दुस्तान के महान खिलाड़ियों में शामिल कर दिया। टांटन के मैदान के नज़दीक नदी बहती है। सौरभ के कई छक्के तो ऐसे थे कि गेंद नदी की तरफ गई और फिर मिली ही नहीं।

सौरभ को सन् 2000 में भारत का कप्तान बनाया गया। उनकी कप्तानी का सबसे महत्वपूर्ण लम्हा आज भी 2002 में जीती नेट-वेस्ट सीरीज़ को माना जाता है। जिस लॉर्ड्स में सौरभ ने अपना पहला शतक बनाया था उसी मैदान की बालकनी से उन्होंने अपनी शर्ट उतारकर हवा में लहराई। यह एक अविश्वसनीय जीत की खुशी थी। बहुत से लोग इस क्षण को भारतीय क्रिकेट का टर्निंग पॉइंट मानते हैं। एक नई टीम और युवा जोश का आत्मविश्वास इस घटना से उभरकर सामने आ गया। यही वो दौर था जब युवराज सिंह, मोहम्मद कैफ, हरभजन सिंह, ज़हीर खान, वीरेंद्र सहवाग जैसे खिलाड़ी सौरभ की कप्तानी में खेल कर विश्व स्तर तक पहुँचे। वैसे इस शर्ट उतारने को बहुत से लोगों ने क्रिकेट की परम्पराओं का अपमान माना लेकिन सौरभ को शायद यह तासीर फुटबाल से विरासत में मिली होगी जो उनका पसन्दीदा खेल है। इसे मुम्बई में फ्लिंटौफ के शर्ट उतारने का जवाब भी समझा गया।

2003 के विश्वकप में गांगुली की कप्तानी में भारत फाइनल में पहुँचा। 1983 के बाद यह भारत का विश्वकप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के हाथों हार के बावजूद इसे भारत की बड़ी सफलता माना गया।

2007 विश्वकप सौरभ और टीम इंडिया के लिए एक बड़ी असफलता साबित हुआ। उन्हें टीम से बाहर कर दिया गया। लेकिन सौरभ को अभी कुछ और साबित करना था। वे खेलते रहे और टीम में वापसी की। वापसी के बाद उन्होंने पाकिस्तान के विरुद्ध दोहरा शतक बनाया जो उनका पहला दोहरा शतक था।

सौरभ को अपने सबसे पहले दौरे में ही "महाराज" का उपनाम मिला। कप्तान बनने के बाद उन्हें टीम के सभी खिलाड़ी "दादा" कहने लगे। यह नाम खूब लोकप्रिय हुआ। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान जॉएफ बायकॉट सौरभ के बड़े फैन हैं। उन्होंने सौरभ को "प्रिंस ऑफ कोलकाता" नाम दिया। वैसे दादा को प्यार से "बंगाल टाइगर" भी कहा जाता है।

सौरभ के छक्कों को क्रिकेट के सबसे दर्शनीय छक्के कहा जाता है। उनके छक्कों में स्टम्प आउट होने का कोई डर नहीं होता। बहुत बार तो लगता कि वे गेंद आने से पहले ही तय कर लेते हैं कि इस पर छक्का मारना है और बेधड़क आगे निकल आते हैं। बल्लेबाज़ी की यह निडरता ही उन्हें एक दर्शनीय खिलाड़ी बनाती है। चक मक

मेरा पन्ना

दर्शना गोस्वामी, छठी, परेल भोईवाड़ा, मुम्बई

मौलिका शर्मा, तीसरी, मुम्बई

अस्सु-कूनी, धर्मशाला, हि. प्र.